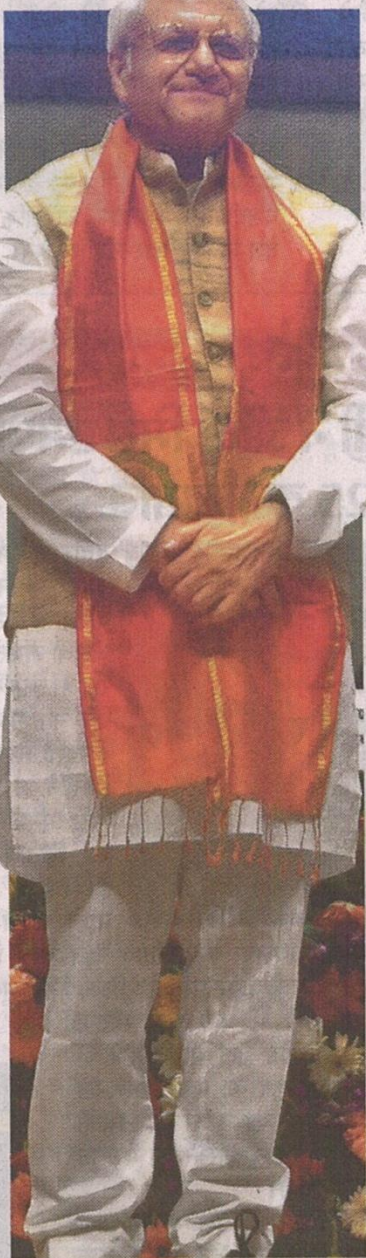


सेलिब्रेशन | आईआईटी इंदौर के 13वें दीक्षांत समारोह में एचसीएल के सहसंस्थापक डॉ. अजय चौधरी ने दिया विजन

AI के बाद अब बारी है हार्डवेयर की



सिटी रिपोर्टर . इंदौर

पिछले 30 सालों से हम सर्विस इंडस्ट्री पर डिपेंड रहे हैं। इसमें भी खासतौर सॉफ्टवेयर पर। 2022 से एआई का रियल इम्पैक्ट मार्केट पर नजर आने लगा है। इससे सॉफ्टवेयर कंपनियों में जॉब के अवसर लगातार घट रहे हैं। इंडिया को अब कुछ अलग करने की जरूरत है। समय आ चुका है कि हम दुनिया के लिए प्रोडक्ट डिजाइन करें। इस दिशा में अभी से प्रयास करें तो आईटी की तरह ही हम ड्रोन टेक्नोलॉजी, इलेक्ट्रिक व्हीकल्स और यहां तक कि स्पेस टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में भी नंबर वन क्यों नहीं हो सकते।

यह कहना है एचसीएल के सहसंस्थापक पद्मभूषण और फादर ऑफ इंडियन हार्डवेयर के नाम से पहचाने जाने वाले डॉ. अजय चौधरी का। वे आईआईटी इंदौर के 13वें दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के चेयरपर्सन डॉ. के सिवन, आईआईटी डायरेक्टर प्रो. सुहास जोशी और आईआईएम इंदौर के डायरेक्टर प्रो. हिमांशु राय भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में बीटेक, एमटेक, पीएचडी प्रोग्राम सहित अलग-अलग कोर्स के 813 ग्रेजुएट्स को डिग्री और टॉपर्स को मेडल प्रदान किए गए। इस बैच में बीटेक के 340, एमटेक के 132, एमएससी के 106, पीएचडी के 131, एमएस (रिसर्च) के 28, एमएसडीएसएम के 75 और बीटेक+एमटेक के 1 ग्रेजुएट शामिल थे। बेस्ट एकेडमिक परफॉर्मेंस के लिए बीटेक कम्प्यूटर साइंस ब्रांच के माधव मुकुंद कदम को प्रेसीडेंट गोल्ड मेडल से नवाया गया।



साइंस और टेक्नोलॉजी से मिलकर बनेगा न्यू इंडिया

डॉ. चौधरी ने अपनी सक्सेस जर्नी शेयर करते हुए यंग ग्रेजुएट्स को कोर इंजीनियरिंग और साइंस पर ध्यान देने के लिए मोटिवेट किया। उन्होंने कहा, आज की जनरेशन मानती है कि कम्प्यूटर साइंस ही फ्यूचर है। दरअसल, इसका ज्ञान जरूरी है लेकिन, सिर्फ उसी तरह जैसे कि प्रोफेशनल वर्ल्ड में अंग्रेजी का होता है। यानी ये ब्रांच आपको अपनी फील्ड में सिर्फ सपोर्ट दे सकती है। प्रोडक्ट के लिए भी हमें दुनिया के किसी देश पर डिपेंड नहीं रहना है। स्पेस टेक्नोलॉजी और एटोमिक टेक्नोलॉजी इसका बेस्ट उदाहरण है। इंडिया का फ्यूचर डिजाइनिंग में ही है। साइंस और टेक्नोलॉजी मिलकर न्यू इंडिया बनाएगी।

सिस्टम थिंकर और उभरते हुए लीडर हैं आप

डॉ. सिवन ने कहा, आईआईटी जैसे महत्वपूर्ण संस्थान का हिस्सा बनते हुए आप सभी लोग अपने साथ गहरी जिज्ञासा और महत्वाकांक्षा लेकर आए होंगे। कड़ी मेहनत से डिग्री पूरी करने के बाद आप सिर्फ इंजीनियर, साइंटिस्ट, रिसर्चर ही नहीं बल्कि सिस्टम-थिंकर और उभरते हुए लीडर भी बन रहे हैं। इस पड़ाव से आपकी नई जिंदगी शुरू हो रही है। आगे बढ़ते हुए अपने जीवन को केवल सफलता के पैमाने पर न आँकें। खुद से सवाल करें कि क्या मैंने मूल्य सृजन किया है, क्या मैंने समाज की सेवा की है, क्या मैंने किसी और को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया है? यही वह विरासत है जिसे आगे ले जाना जरूरी है।

होनहारों को मिले मेडल

बीटेक की कम्प्यूटर साइंस ब्रांच में कृष अग्रवाल, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में हरमन सिंह बग्गा, मैकेनिकल इंजीनियरिंग में दिव्यम पांडे, सिविल इंजीनियरिंग में क्षितिज केसरवानी और मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग एंड मटेरियल्स साइंस में ईशान मोहन श्रीवास्तव को अपने संकाय में बेस्ट एकेडमिक परफॉर्मेंस के लिए सिल्वर मेडल दिए गए। इसी तरह एमएसडीएसएम में अमित कुमार, एमएससी में सोमाल्य दास और एमटेक में ओमकार राजेश कोकणे ने सिल्वर मेडल पाया। सिविल इंजीनियरिंग की मधु त्रिवेदी ने मास्टर्स प्रोग्राम में हाइएस्ट सीपीआई पाकर बेस्ट फीमेल स्टूडेंट के लिए बूटी फाउंडेशन गोल्ड मेडल हासिल किया। इसी बार से दो और मेडल स्थापित किए गए थे। बायोसाइंसेस एंड बायोमेडिकल में डॉ. तन्मय व्यास को पीएचडी के लिए अगम प्रसाद मेमोरियल गोल्ड मेडल और कम्प्यूटर साइंस के डॉ. आदित्य अंशुल को उत्कृष्ट पीएचडी के लिए श्री गणित सुब्बा राव एंड श्रीमती गणित वेंकट रमानी पुरस्कार मिला।

88% को ही मिली जॉब, 5 को 1-1 करोड़ के पैकेज

समारोह तक आईआईटी में प्लेसमेंट के लिए कंपनियों के आने का सिलसिला जारी है। प्लेसमेंट प्रक्रिया में शामिल हुए 12 प्रतिशत ग्रेजुएट्स को अब तक किसी कंपनी से ऑफर नहीं मिला। हालांकि, पहली बार 5 को 1-1 करोड़ रुपये के पैकेज मिले। इससे एवरेज पैकेज बढ़कर 27 लाख रुपये सालाना हो गया है। 2024 में भी 1 ग्रेजुएट को 1 करोड़ का पैकेज ऑफर मिल चुका है।

दो साल में बेहतर हुआ इंफ्रास्ट्रक्चर, तीन से पांच साल में सुधरेगी रैंकिंग

समारोह से पहले चर्चा में आईआईटी डायरेक्टर प्रो. जोशी ने बताया, हम देश में पहले आईआईटी है जहां स्पेस सेक्टर में बीटेक कोर्स शुरू किया। दो साल में इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाया है जिससे नए कोर्स शुरू करते जा रहे हैं। अब बी.डिजाइन कोर्स भी कराएंगे। साथ ही सस्टेनिलिबिटी का भी कोर्स तैयार होगा। तीन से चार साल के भीतर 1500 करोड़ के काम होंगे। 100 करोड़ रुपये रिसर्च इक्विपमेंट पर खर्च होंगे। एचईएफए से 624 करोड़ रुपये मिले हैं। क्यूएस रैंकिंग में पिछड़ने के सवाल पर कहा, पिछले वर्षों से बेहतर स्कोर कर रहे हैं। कई और बड़े नेशनल इंपोर्टेंट के प्रोजेक्ट चल रहे हैं। इनमें 150 करोड़ का ट्रांसलेशनल रिसर्च पार्क का प्रोजेक्ट भी है।